ज्ञानविविधा
कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 515-521
©2026 Gyanvividha
DOI : 10.71037/gyanvividha.v3i1.65
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

डॉ. देवेन्द्र सिंह राजपूत
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़.

Corresponding Author :

डॉ. देवेन्द्र सिंह राजपूत
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़.

वाल्मीकि रामायण में मूल्याधारित जीवन-प्रबन्धन के सिद्धान्त

शोध-सारांश : वाल्मीकि रामायण भारतीय संस्कृति, जीवन-दृष्टि एवं मानवीय मूल्यों का आकर ग्रन्थ है। यद्यपि यह आदिकाव्य मुख्यतः रामकथा के रूप में प्रसिद्ध है तथापि इसके विभिन्न प्रसंगों में व्यक्ति, परिवार, समाज तथा संगठन के समुचित संचालन के लिए जीवन-प्रबन्धन पर आधारित अनेक सिद्धान्त निहित हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में वाल्मीकि रामायण के चयनित प्रसंगों एवं श्लोकों के आधार पर मूल्याधारित जीवन-प्रबन्धन की प्रमुख अवधारणाओं का विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में सत्यनिष्ठा, त्याग, तपस्या, प्रतिज्ञा एवं कर्त्तव्यपालन, लक्ष्य-निष्ठा, कार्य-प्रतिबद्धता, आत्मविश्वास, धैर्य, साहस, नेतृत्व, कुशल संवाद, समस्या-समाधान, रणनीतिक चिन्तन तथा परिस्थितिनुकूल व्यवहार जैसे जीवन-प्रबन्धन के आयामों को रेखांकित किया गया है। वाल्मीकि रामायण में प्रतिपादित प्रसंगों के आधार पर जीवन-प्रबन्धन के सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उनकी उपादेयता को बताया गया है। ये सिद्धान्त वर्तमान जीवन शैली में आधुनिक व्यक्तिगत, सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन के लिए अत्यन्त प्रासंगिक और अनुकरणीय हैं।

कुंजी शब्द : जीवनमूल्य, नेतृत्व, कुशल संवाद, प्रबन्धन, जीवन प्रबन्धन, रामायण में प्रबन्धन ।

1. भूमिका : भारतीय चिन्तन परम्परा वैदिक काल से ही गंगा नदी की भांति सतत प्रवाहमान है। भारत में सांस्कृतिक एवं जीवन मूल्यों के विकास कि यह धारा अनेक शास्त्र, टीकाओं, भाष्यों व विविध परम्पराओं यथा, दर्शन, काव्य, साहित्य, कथा साहित्य, नाटक आदि रुपी वितरिकाओं द्वारा समय समय पर परिपोषित एवं वर्धन को प्राप्त होती रही । इसी ज्ञान सरिता में संस्कृत साहित्य के आदिकाव्य वाल्मीकि रामायण का अविस्मरणीय योगदान रहा है।

रामायण में वर्णित कथानक ने भारतीय जनमानस को संभवतया सर्वाधिक प्रभावित किया है।

2. रामायण में जीवन मूल्य : भारतीय जीवन सरणी में पुरुषार्थ चतुष्य, आश्रम चतुष्य, गुरुकुल आधारित शिक्षा पद्धति की जीवन मूल्यों के विकास में महनीय भूमिका रही है। रामायण श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों का आकर ग्रन्थ है जो कि निम्नलिखित उद्धरणों में उद्घाटित होते हैं:

2.1 राम का आदर्श व्यक्तित्व: भारतीय इतिहास में राम को मर्यादा पुरुषोत्तम की संज्ञा से विभूषित किया गया है जिसके मूल में उनके व्यक्तिगत गुण हैं, यथा -

उत्साहः पौरुषं सत्त्वमानृशंस्यं कृतज्ञता।
विक्रमाश्च प्रभावश्च सन्ति वानर राघवे।।[1]

यहां राम दृढ़ता, पुरुषत्व, पराक्रम, दयालुता, कृतज्ञता, योग्यता और शक्ति इन उच्चकोटि के मानवीय मूल्यों से संपन्न हैं ।

2.2 सत्यवादिता : रामायण महाकाव्य के नायक राम नीति, धर्म और सत्य के मार्ग का अनुसरण करने के कारण भारतीय इतिहास में अमर हो गए।

सत्यम् एव ईश्वरो लोके सत्यं पद्माश्रिता सदा।
सत्यमूलानि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परं पदम्।।[2]

सत्य ही ईश्वर है, धन की देवी सदैव सत्य का आश्रय लेती है। सत्य ही संसार का मूल है, सत्य से बढकर संसार में कुछ नहीं है ।

2.3 त्याग, तपस्या एवं तपोवन की त्रिवेणी पर रामायण की संस्कृति को समझा जा सकता है । भरत का **त्याग,** राम, सीताजी एवं लक्ष्मण द्वारा **तपोवन** का चयन एवं पूर्ण प्रतिबद्धता एवं सत्यनिष्ठा से पिता के वचन का पालन करना। ये सामाजिक प्रतिबद्धताएं एवं त्याग की भावना एक निःस्वार्थ एवं मूल्यवान समाज का निर्माण करती हैं।

2.4 प्रतिज्ञा एवं कर्त्तव्यपालन का अनुपम आदर्श : प्रतिज्ञा पालन का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करते हुए राम कहते हैं "चाहे चन्द्रमा से उसकी प्रतिमा अलग हो जाए हिमालय अपनी शीतलता छोड दे अथवा समुद्र अपनी सीमा लांघकर आगे बढ जाए किन्तु मैं अपने पिता की प्रतिज्ञा को नहीं तोड सकता।"

लक्ष्मीः चन्द्रात् अपेयाद्वा हिमवान् वा हिमं त्यजेत् ।
अतीयात् सागरो वेलां न प्रतिज्ञामहं पितुः।।[3]

वर्तमान सामाजिक जीवन, नैगमिक जीवन एवं कार्यस्थल पर भी इसी प्रकार की दृढ प्रतिबद्धता हो तो सुव्यवस्था बनी रहेगी ।

3. रामायण में प्रबन्धन कौशल के सिद्धान्त

3.1 नेतृत्व निर्माण : रामायण से यह सीख मिलती है कि एक कुशल नेतृत्वकर्त्ता में यह गुण अवश्य होना चहिए कि वह विकल्प के तौर पर अच्छे नेतृत्वकर्त्ता तैयार कर सके । राम में यह गुण है कि विपरीत परिस्थितियों में, समय एवं संसाधनों के अभाव में वे सबकी क्षमता को पहचानकर कुशल नेतृत्वकर्त्ता तैयार करने में सफल प्रतीत होते हैं:

आगता त्वामियं बुद्धिः स्वजा वाणिकी च या।
भृषमुत्सहसे तत् रक्षितं पृथिवीमपि ॥[4]

यहां भरत के अन्दर निहित पृथ्वी की रक्षा करने में सक्षमता को उद्घाटित कर उनका मनोबल बढाते हैं।

भरत को आत्मविश्वास से परिपूर्ण करते हुए एवं अपने अधीनस्थों की क्षमताओं का सर्वोत्तम उपयोग करने की सलाह देते हैं :

अमात्यैश्च सुहृद्भिश्च बुद्धिमद्भिश्च मंत्रभिः।
सर्वकार्याणि सम्मन्त्र्य सुमहन्त्यपि कार्यय ॥[5]

यद्यपि यह एक महान कार्य है, आप इसे अधिकारियों, शुभचिंतकों और बुद्धिमान मंत्रियों की सलाह से पूरा करेंगे । युवराज अंगद जो कि साहसी, पराक्रमी एवं निर्भीक युवा है उसके प्रति किसी भी प्रकार का पूर्वाग्रह रखे बिना वह उसे युवराज घोषित करते हैं:

इमम् अपि अंगदं वीरं यौवराज्ये अभिषेचय ।[6]

राम में यह गुण है कि वह लोगों के गुणों को पहचानकर उन्हें उनके कौशल के अनुरूप कार्य प्रदान करते हैं। किसी भी राजा के पास यदि हनुमान जैसे मन्त्री हों तो वह अपना कार्य कैसे सिद्ध नहीं कर सकेंगे?जिस राजा के पास हनुमान जैसे उत्कट कोटि के गुणों वाले महान कार्यसाधक हों, वह अपने कूटनीतिक कौशल से प्रेरित होकर अपने सभी लक्ष्य पूरे कर सकता है ।

एवं गुणगणैर्युक्ता यस्य स्युः कार्यसाधकाः।
तस्य सिध्यन्ति सर्वाऽर्था दूतवाक्यप्रचोदिताः।।[7]

हनुमान जी द्वारा किए गए संवाद में यह सब निहित है।

राम प्रोत्साहन से ही नेतृत्व निर्माण भी करते हैं । हनुमान, अंगद, जाम्बवन्त, सुग्रीव, नल-नील, वानर सरदार शतबलि, लंगूर जाति के गवाक्ष, गजवन्त, यूथपति कन्दमाधन, कपि पुंगव – इन सभी में निहित क्षमताओं को पहचानकर उन्हें प्रोत्साहित कर एक सुदृढ एवं सुसंगठित सैन्य शक्ति का निर्माण करते हैं ।

जटायु कर्तव्यनिष्ठा एवं मूल्यनिष्ठा का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं ।

रामायण से प्रबन्धन का महत्त्वपूर्ण पाठ सीखने को मिलता है कि व्यक्तिगत प्रदर्शन एवं क्षमता की अपेक्षा कुशल एवं सुनियोजित नेतृत्व पर बल देना चाहिए। रामायण से जीवन एवं व्यवसायिक प्रबन्धन का यह पाठ भी मिलता है कि आपकी व्यक्तिगत क्षमता भले ही अद्भुत् है, उत्कृष्ट है, अपने क्षेत्र में उच्च कोटि का प्रदर्शन करते हैं किन्तु सामने सुनियोजित एवं सुसंगठित गुणवत्ता वाला नेतृत्व है वही सफल होगा । उदाहरण के लिए युद्धकाण्ड में मेघनाथ के लिए बनाई गई रणनीति

यद्वा नरेन्द्रस्यबलं तेन सर्वेण सम्वृतः ।
हनूमत्प्रमुखैः यूथपैश्चैवसह लक्ष्मण ।।[8]
जाम्बवेन ऋक्षपतिना सह सैन्येन सम्वृतः ।
जहि तम् राक्षस सुतं मायाबलविशारदम् ।।[9]

यहां प्रसंग मिलता है कि वानर राजा की पूरी सेना से घिरे हुए, सेना के प्रमुख हनुमान के साथ, भालू के राजा जाम्बवान द्वारा संरक्षित, रावण के पुत्र का अंत किया गया जो चाल में पारंगत था ।

3.2 कुशल संवाद : रामायण के अनुसार व्यापार हो या व्यक्तिगत जीवन सभी में संवाद महनीय भूमिका का निर्वहन करता है। जो कि अधोलिखित भावों से परिपूर्ण हो:

I. **<u>आत्मीयता का भाव अर्थात् सहृदयता:</u>** राम का हनुमान से प्रथम संवाद, हनुमान का भरत से मिलाप, विभीषण से भेंट <u>सहृदयता</u> के अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

II. **परस्पर संवाद** : अपने कल्याण के लिए निकट और प्रियजनों द्वारा सक्षम और बुद्धिमान लोगों से शाश्वत सलाह लेना हमेशा वांछनीय होता है। जो व्यक्ति कठिन परिस्थिति में है, उसे जटिल मामलों पर सलाह लेना उचित है।

सुहृदाम् अर्थकृच्छेषु युक्तंबुद्धिमतासदा ।
समर्थेनः उपनिर्देष्टुम् शाश्वतीं भूतिमिच्छता ।।[10]

III. पारस्परिक संवाद में ऐसी वाक्पटुता हो कि हम अपने राजा/नेत्रीत्वकर्त्ता के गुणों का विवेचन इस शैली में करें कि सामने वाला प्रभावित हो जाए, शत्रु हो तो भयभीत हो जाए । जिस प्रकार बालि पुत्र अंगद एवं हनुमान जी द्वारा

रावण की सभा में अपने बल, पराक्रम एवं अपने स्वामी के वर्णन से रावण को नहीं किन्तु रावण के सभासदों एवं मंत्रियों को भयभीत अवश्य कर दिया जिससे कि उनका मनोबल युद्ध से पहले की दुर्बल हुआ । आज के समय में ऐसे व्यक्ति को ही ब्रांड एम्बेडेसर कहा गया है।

जब किष्किन्धाकाण्ड में वन में हनुमान जी से पहली भेंट होती है तब लक्ष्मण से कहते हैं कि हे सौमित्र ! वानरराज महात्मा सुग्रीव के ये मन्त्री हनुमान वाक्यज्ञ हैं, स्नेहयुक्त हैं और शत्रु संहारक है:

वाक्यज्ञं मधुरैर्वाक्यैः स्नेहयुक्तम् अरिन्दम ।।[11]

प्रबन्धन में संवाद के लिए Triple filter Test की बात कही गई है । पाश्चात्य दार्शनिक एवं चिन्तक सुकरात ने कहा है कि संवाद में 3 घटक होने चाहिए: Truthfulness, Goodness एवं Usefulness.

राम के व्यवहार में ये सभी घटक भलीभांति चरितार्थ होते हैं इसी कारण वो जहां भी गए लोग इनके व्यवहार से प्रभावित होकर उनका अनुसरण करने लग गए।

3.3 दूरदर्शितापूर्ण निर्णय लें : राजा दशरथ द्वारा रानी कैकई को दिए गए वचन यह दर्शाते हैं कि आपके जीवन, व्यवसायिक जीवन में भविष्य को लेकर यदि आप कोई प्रतिबद्धता कर रहे हैं तो उसमें आने वाले जोखिमों का पूर्वमूल्यांकन अवश्य कर लें ।

देशकालविहीनानिकर्माणिविपरीतवत् ।
क्रियमाणानिदुष्यन्तिहवींष्यप्रयतेष्विव ।।[12]

समय और स्थान का ध्यान किये बिना किये गये कार्य उसी प्रकार अनर्थकारी होंगे जैसे बिना पवित्र किये अग्नि में डाली गई आहुति व्यर्थ हो जाती है।

रामायण हमें **ब्रांड का महत्त्व** समझाती है । राम जी की अनुपस्थिति में उनकी चरण पादुकाएं अयोध्या नगरी एवं राजसिंहासन पर उनका एवं उनके गुणों का प्रतिनिधित्व कर रही थीं । प्रजा में असंतोष का भाव भी नहीं रहा । व्यवसायिक जीवन में भी व्यक्ति से ज्यादा महत्त्व ब्रांड को दिया जाता है ।

एक परिवार व समाज के प्रमुख के रुप में, किसी व्यवसायिक संगठन के प्रमुख के रूप में नेतृत्वकर्ता का दायित्व बनता है कि वह सभी के प्रति एक **सहानुभूति एवं समानुभूति**, दया, करुणा का भाव रखे । जो लोग संगठन के हित में तत्पर हैं उनको पर्याप्त महत्त्व, प्रतिनिधित्व एवं सम्मान मिलना चाहिए । विभीषण के प्रति रावण की असहानुभूति लंका के विनाश का बहुत बडा कारणा बनी । जबकि श्रीराम में समानुभूति थी उनको **करुणानिधान** कहा जाता था । विरोधी को भी क्षमा करने शरण देने का अद्भुत गुण – **शरणागत को शरण देते थे** । इसके अतिरिक्त रामायण के की बहुत सी घटनाएं प्रबन्धन के महत्त्वपूर्ण गुण सिखाती हैं, यथा:

- युवावस्था में स्वयं पर नियंत्रण रखना चाहिए एवं संयमित होना चाहिए। सूर्पनखा एवं रावण का आकर्षण ही उनके अन्त का कारण बना। इन्द्रिय सुख क्षणिक होता है वह हमारे यश, वैभव एवं कीर्ति का अन्त कर देता है।
- संदेहास्पद आकर्षण से सावधान रहें । यदि सीताजी स्वर्ण मृग पर आकर्षित नहीं होतीं तो रावण द्वारा उनका हरण संभव नहीं था। वर्तमान युवा पीढी के लिए यह सीख अत्यन्त प्रासंगिक है।
- काम, क्रोध, लोभ, अहंकार एवं शक्तियों का दुरुपयोग मनुष्य के पतन का कारण बनते हैं जैसे रावण का पतन हुआ ।
- संगठनात्मक संचालन का समुचित उदाहरण टीम वर्क का अनुपम उदाहरण सुग्रीव की सेना एवं रामसेतु का निर्माण है।
- समाज के वंचित एवं दुर्बल वर्ग के प्रति समानुभूति की भावना होनी चाहिए। राम माता शबरी के पास गए यह उनकी समानानुभूति की भावना को प्रकट करता है ।

4. लक्ष्य-निष्ठा एवं कार्य-प्रतिबद्धता : जीवन-प्रबन्धन की सफलता का एक प्रमुख आधार व्यक्ति की लक्ष्य-निष्ठा एवं कार्य के प्रति प्रतिबद्धता है। निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए समय, ऊर्जा और संसाधनों का समुचित नियोजन तथा कार्य के प्रति दृढ़ संकल्प आवश्यक होता है। वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड में हनुमान् के समुद्र-लंघन का प्रसंग इस दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। सीता की खोज के उद्देश्य से समुद्र पार करने के लिए उद्यत हनुमान् अपने कार्य की समय-सीमा तथा अपनी प्रतिज्ञा के प्रति पूर्णतः सजग दिखाई देते हैं। वे कहते हैं -

त्वरते कार्यकालो मे अहश्चाप्यतिवर्तते।
प्रतिज्ञा च मया दत्ता न स्थातव्यमिहान्तरे॥[13]

इस कथन में एक ओर समय की महत्ता एवं समय-प्रबन्धन का बोध दिखाई देता है, तो दूसरी ओर लक्ष्य की प्राप्ति के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता एवं उत्तरदायित्व-बोध अभिव्यक्त होता है। आधुनिक जीवन-प्रबन्धन की दृष्टि से इस प्रसंग को समय प्रबन्धन एवं लाक्स्योन्मुखता के साथ सम्बद्ध किया जा सकता है।

5. आत्मविश्वास एवं आत्म-प्रभावकारिता : जीवन में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए बाह्य संसाधनों के साथ-साथ व्यक्ति का आन्तरिक आत्मविश्वास, मानसिक दृढ़ता तथा अपनी क्षमताओं में विश्वास भी अत्यन्त आवश्यक है। । विशाल समुद्र को पार करने जैसे दुष्कर कार्य के लिए स्वयं को तैयार करते हुए हनुमान् अपनी अन्तर्निहित शक्ति को जाग्रत करते हैं—

संहृत्य च भुजौ श्रीमांस्तथैव च शिरोधराम्।
तेजः सत्त्वं तथा वीर्यमाविवेश स वीर्यवान्॥[14]

आधुनिक मनोविज्ञान की दृष्टि से इस स्थिति को आत्मविश्वास, आत्मबल, स्वक्षमता कहा जाता है।

6. संकट में धैर्य एवं प्रत्यास्थता : जीवन-प्रबन्धन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष संकट एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखना तथा कठिनाइयों के बीच निरन्तर प्रयत्नशील रहना है। हनुमान् का समुद्र-लंघन इसी प्रकार की चुनौतीपूर्ण परिस्थिति का उदाहरण है। वे जिस कार्य के लिए अग्रसर होते हैं, वह अत्यन्त कठिन है। कवि उनके इस संकल्प को इस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं -

दुष्करं निष्प्रतिद्वन्द्वं चिकीर्षन् कर्म वानरः।
समुदग्रशिरोग्रीवो गवांपतिरिवाबभौ॥[15]

7. नेतृत्व में धैर्य, साहस एवं सकारात्मक व्यक्तित्व : जीवन-प्रबन्धन का सम्बन्ध केवल व्यक्तिगत सफलता से नहीं है, इसके अन्तर्गत व्यक्ति की नेतृत्व-क्षमता, दूसरों को प्रेरित करने की शक्ति, नैतिक आचरण तथा सकारात्मक व्यक्तित्व भी सम्मिलित हैं। वाल्मीकि रामायण में श्रीराम के व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए सीता उनके अनेक नेतृत्वकारी गुणों की ओर संकेत करती हैं -

उत्साहः पौरुषं सत्त्वमनृशंस्यं कृतज्ञता।[16]

8. समस्या-समाधान एवं रणनीतिक चिन्तन : समस्या की पहचान, परिस्थिति का विश्लेषण, उपलब्ध विकल्पों का मूल्यांकन तथा उपयुक्त रणनीति का निर्धारण अत्यन्त आवश्यक है। वाल्मीकि रामायण का सुन्दरकाण्ड इस दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विमर्श प्रस्तुत करता है।

लंका पहुँचने के पश्चात् हनुमान् तत्काल किसी प्रकार की उतावली नहीं दिखाते। वे सर्वप्रथम लंका की स्थिति का निरीक्षण करते हैं, उसकी संरचना एवं सुरक्षा-व्यवस्था को समझते हैं तथा उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करते हैं। इसके पश्चात् वे सीता की खोज करते हैं और उनके समक्ष उपस्थित होने के लिए ऐसी रणनीति अपनाते हैं जिससे उनका उद्देश्य भी पूरा हो तथा सीता को किसी प्रकार की आशंका भी न हो। हनुमान् की यह कार्य-पद्धति आधुनिक रणनीतिक सोच एवं समस्या समाधान की प्रक्रिया से तुलनीय है।

9. परिस्थितिनुकूल व्यवहार एवं अनुकूलनशील नेतृत्व : जीवन-प्रबन्धन में परिस्थितियों के अनुसार अपने व्यवहार, संचार-शैली और कार्य-पद्धति में सुनम्यता अत्यन्त आवश्यक है। प्रत्येक परिस्थिति में एक ही प्रकार की रणनीति उपयोगी नहीं होती। अतः व्यक्ति को परिस्थिति की प्रकृति, सामने वाले व्यक्ति की मानसिक स्थिति तथा कार्य के उद्देश्य के अनुरूप अपने व्यवहार को अनुकूलित करना पड़ता है।

सुन्दरकाण्ड में हनुमान् का सीता के साथ संवाद इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है। सीता अत्यन्त विपरीत एवं संवेदनशील परिस्थिति में हैं। अतः हनुमान् उनके समक्ष अपनी पहचान एवं राम का संदेश इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं जिससे उनके मन में विश्वास उत्पन्न हो। आवश्यकता पड़ने पर वे अपने स्वरूप को भी परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तित करते हैं -

इति संचिन्त्य हनुमान् तदा प्लवगसत्तमः।
दर्शयामास वैदेह्याः स्वरूपमरिमर्दनः॥[17]

आधुनिक प्रबन्धन अध्ययन में इसे स्वीकारात्मक नेतृत्व की संकल्पना से सम्बद्ध किया जा सकता है।

10. निष्कर्ष : अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वाल्मीकि रामायण केवल धार्मिक अथवा साहित्यिक आख्यान न होकर मूल्याधारित जीवन-दृष्टि एवं समग्र जीवन-प्रबन्धन का आकर ग्रन्थ है। इसमें प्रतिपादित आदर्शों का आधार बाह्य सफलता की अपेक्षा सत्य, धर्म, कर्त्तव्य, त्याग, आत्मसंयम, करुणा और उत्तरदायित्व जैसे मानवीय मूल्यों में निहित है। श्रीराम का व्यक्तित्व सत्यनिष्ठा, प्रतिज्ञापालन, नेतृत्व, सहृदयता एवं कर्त्तव्यपरायणता का आदर्श प्रस्तुत करता है, जबकि हनुमान् के चरित्र में लक्ष्य-निष्ठा, आत्मविश्वास, साहस, धैर्य, समयबोध, समस्या-समाधान तथा परिस्थितिनुकूल रणनीति के उत्कृष्ट उदाहरण प्राप्त होते हैं। भरत का त्याग, जटायु की कर्त्तव्यनिष्ठा तथा राम की सहयोगियों की क्षमता पहचानने और उन्हें प्रोत्साहित करने की प्रवृत्ति मूल्याधारित नेतृत्व की व्यापक अवधारणा को पुष्ट करती है।

अतः रामायण में वर्णित प्रबन्धन-दृष्टि व्यक्ति के व्यक्तिगत विकास तक सीमित न रहकर पारिवारिक, सामाजिक एवं संगठनात्मक जीवन को भी दिशा प्रदान करती है। आधुनिक जीवन की चुनौतियों के संदर्भ में लक्ष्य-निष्ठा के साथ नैतिकता, नेतृत्व के साथ संवेदनशीलता और निर्णय के साथ दूरदर्शिता का समन्वय आवश्यक है। इस दृष्टि से वाल्मीकि रामायण के जीवन-प्रबन्धन सिद्धान्त आज भी व्यक्ति एवं समाज के संतुलित, उत्तरदायी और मूल्यपरक विकास के लिए अत्यन्त प्रासंगिक हैं।

11. संदर्भ सूची :

1. रामायण, 5.37.13
2. रामायण, 2.109.13
3. रामायण, 2.112.18
4. रामायण, 2.112.16
5. रामायण, 2.112.17
6. रामायण, 4.26.12
7. रामायण, 4.3.35
8. रामायण, 6.85.21
9. रामायण, 6.85.22
10. रामायण, 6.17.33
11. रामायण, 4.3.27

12. रामायण, 6.63.6
13. रामायण, 5.1.132
14. रामायण, 5.1.36
15. रामायण, 5.1.2
16. रामायण, 5.37.13
17. रामायण, 5.37.33

12. संदर्भ ग्रंथ सूची

1. महर्षि वाल्मीकि. (2007). *श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण* (32वां सं.). गीताप्रेस गोरखपुर।
2. *वाल्मीकि रामायणः संस्कृतटीकात्रयसमन्वित.* (1983). परिमल पब्लिकेशन्स।
3. शर्मा, रा. श. (बि.व.). *प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार एवं संस्थाएं.* राजकमल प्रकाशन।
4. जाबजी, पा. (व्या.). (1930). *वाल्मीकि रामायण.* निर्णय सागर प्रेस
5. व्यास, शा. कु. ना. (2022). *रामायण कालीन संस्कृति.* सस्ता साहित्य मण्डन प्रकाशन।
6. व्यास, शा. कु. ना. (1958). *रामायणकालीन समाज.* सत्साहित्य प्रकाशन।
7. चतुर्वेदी, शि. (बि.व.). *वाल्मीकि रामायण में राजनीति.* हंसा प्रकाशन।
8. गुप्त, रा. प्र. (1995). *वाल्मीकि रामायण में राजनीतिक तत्त्व.* ईस्टर्न बुक लिंकर्स।

•